



Asian Journal of Multidisciplinary Studies

ISSN: 2321-8819 (Online)

2348-7186 (Print)

Impact Factor: 1.498

Vol. 4, Issue 13, December 2016

अलकनन्दा घाटी में महिलाएं एवं पर्वतीय पर्यावरण

रेखा राणा^{1*}, कमलेश कुमार¹ एवं जितेन्द्र सिंह राणा²¹भूगोल विभाग, हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल)– 246174, उत्तराखण्ड² जन्तु विज्ञान विभाग, हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल)– 246174, उत्तराखण्ड

शोध सारांश हिमालय क्षेत्र में उत्तराखण्ड जैवीय विविधता एवं पर्यावरण की दृष्टि से एक अत्यंत संवेदनशील राज्य है। कृषि क्षेत्र में विकास और उन्नति के नाम पर वनों के ह्रास से पर्यावरण को सबसे अधिक नुकसान हुआ है। इसके फलस्वरूप समस्त पारिस्थितिकीय तन्त्र पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। अतः इस पर्वतीय भू-भाग के नियोजन तथा प्रबन्धन की आवश्यकता है। हिमालय क्षेत्र के अलकनन्दा घाटी में वनों के ह्रास की रोकथाम एवं पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रस्तुत अध्ययन ग्राम रौता को प्रति चयनित ग्राम के रूप में महिलाओं की बदलती स्थिति एवं पर्यावरण संतुलन का अध्ययन परिवर्तनशील ग्रामीण महिला क्रिया-कलाप के स्वरूप को वर्ष 1975 व 2005 में लिए गए आंकड़ों का आंकलन द्वारा किया गया है, परिणाम स्वरूप वर्ष 2005 में महिलायें आम जीवन की आवश्यकताओं यथा लकड़ी, घास, पानी के संकट से भयभीत होकर वृक्षों का संरक्षण एवं संवर्द्धन की ओर आकृष्ट हुई हैं। शिक्षा के विकास द्वारा ग्रामीण महिलाओं में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता का भाव स्पष्ट दिखाई देता है। महिलाओं में सामाजिक जागृति उत्पन्न हुई और स्थानीय विकास के प्रति रुचि बढ़ी है। इस प्रकार ग्रामीण समस्याओं के निराकरण, मज़बूत ग्रामीण अर्थव्यवस्था, स्वच्छता, राजनैतिक जागरूकता एवं पर्वतीय पर्यावरण के संरक्षण में महिलायें अपनी प्रत्यक्ष भूमिका निभा रही हैं।

संकेत शब्द : हिमालय क्षेत्र, प्रति चयनित ग्राम, उच्च शिक्षा, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, स्वच्छता, राजनैतिक जागरूकता

परिचय

हिमालय क्षेत्र पर्यावरण अवनयन की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अनेक विद्वानों के सुचिन्तित विचार एवं हिमालय क्षेत्र के सामाजिक कार्यकर्ताओं के व्यापक अनुभवों ने भी यही बताया है। उत्तराखण्ड एक जैवीय विविधतायुक्त तथा पारिस्थितिकीय दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील राज्य है, जिसका अधिकांश भू-भाग पर्वतीय है। यहां के अधिकतर क्षेत्रों में भूमि व मिट्टी पथरीली तथा भू-कटाव से प्रभावित है। मनुष्य तथा पशुओं के बढ़ते जैविक दबाव, प्राकृतिक संसाधनों यथा मृदा, जल एवं वनस्पति के अवैज्ञानिक दोहन, त्रुटिपूर्ण भू-उपयोग विधियां अपनाने, उपयुक्त प्रबंध तकनीक के अभाव तथा सामूहिक परिसम्पत्तियों का प्रबंधन करने वाली पारम्परिक संस्थाओं के विघटन के कारण हमारी जीवनदायिनी नदियों के जलग्रहण क्षेत्रों का ह्रास हुआ है (कार्यपूति दिग्दर्शिका, 2015)। इसके फलस्वरूप समस्त पारिस्थितिकीय तन्त्र पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। रुग्ण होते पर्वतीय पर्यावरण के कारण पर्वतों के जलागम क्षेत्रों पर असर पड़ा है (वार्षिक प्रतिवेदन, 2008)। जल स्रोतों के घटते निस्तारण के रूप में या वर्षा के दिनों में बाढ़ के रूप में देखा जा सकता है। अतः इस पर्वतीय भू-भाग के वैज्ञानिक नियोजन तथा समेकित प्रबन्धन की आवश्यकता प्रतीत हुई है (कार्यपूति दिग्दर्शिका, 2015)।

उत्तराखण्ड के सामाजिक आन्दोलनों में महिलाओं ने पर्यावरण के प्रति जाग्रति के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यहाँ पर महिलायें पहाड़ जैसा कठिन

जीवन व्यतीत करती हैं क्योंकि गृहस्थी का सारा बोझ महिलाओं के कंधों पर होता है। पहाड़ की नारी को वर्ष-भर अनेक कार्यों में ही जुटी रहती हैं। विशेषकर आषाढ़ एवं आश्विन का महीना तो महिलाओं के लिए अत्यन्त ही कष्टकारी होता है। जहां आषाढ़ माह में समय रहते खेतों की गुड़ाई निराई का काम निपटाना होता है वहीं अश्विन माह में फसलों की कटाई-मंडाई के काम में दिन-रात लगी रहती हैं। पुरुषों का काम प्रायः खेतों की जुताई-बोवाई तक ही सीमित रहता है, उनकी दिनचर्या आज भी पूर्ववत् ही है। अधिकतर पुरुष सेना में सेवारत हैं, इस तरह महिलाओं को ही घर की पूरी जिम्मेदारी संभालनी पड़ती है। हिमालयी क्षेत्र में ग्रामीण अंचलों के पुरुष ज्यादातर रोजगार के लिए उत्प्रवास करते हैं, पहाड़ों में रोजगार के साधन उपलब्ध न होने के पहले उन्हें मजबूरन देश के अन्य भागों की ओर पलायन करना पड़ता है। वर्तमान में निवेश के बढ़ते अवसर ने गांव को भी तरक्की के नक्शे पर मजबूती से उकेरा है। गांवों में निवास करने वाले लोगों की आर्थिक समृद्धि का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि कितने गांव पक्की सड़कों से जुड़े हैं, बैंक शाखाएं कितनी हैं, टेलीफोन की संख्या, बिजली व गैस के कनेक्शन कितने हैं। लेकिन आर्थिक समृद्धि के इन सूचकों के स्तर पर ग्रामीण भारत विशेषकर हिमालयी राज्यों में अवस्थित गांवों की तस्वीर कुछ और ही बयां करती है। यूं तो पूरे हिमालयी राज्यों में चार करोड़ लोगों के आशियाने हैं लेकिन अलग-अलग राज्यों में रहने वाले लोग विपरीत परिस्थितियों में जीवन जी रहे हैं (किरन ठाकुर, 2012)।

उत्तराखण्ड के इतिहास में महिलाओं ने यहाँ की कृषि एवं आर्थिकी में बहुत बड़ा योगदान दिया है उत्तराखण्ड इयर बुक (2009)। आज गाँव और शहर का बड़ा विरोधाभासी स्वरूप इसी हिमालयी क्षेत्र में देखने को मिलता है। इस प्रकार से पर्वतीय सांस्कृतिक पर्यावरण को समृद्ध बनाने में महिलाओं का विशिष्ट स्थान है। हिमालयी लोक जीवन में महिलाओं का वही स्थान है जो शरीर में श्वास का। नारी के बिना यहां की अर्थव्यवस्था निष्प्राण है। ग्रामीण आंचलों में वर्तमान आधुनिकीकरण के कारण तीव्र गति से बदलाव आ रहा है। वर्तमान परिवेश में ग्रामीण महिलाएं भी उच्च शिक्षा द्वारा जागरूक हो रही हैं। ग्रामीण महिलाओं का रहन-सहन, खान-पान, आचार-विचार आदि में शहरीकरण का प्रभाव स्पष्ट झलकता है (नित्यानन्द, 2004)। महिलायें आज अपने पर्वतीय पर्यावरण में बदलाव के प्रति सचेत हैं।

अलकनन्दा घाटी में पर्यावरण के संरक्षण में महिलाओं ने विशेष भूमिका रही है, जिसमें गौरा देवी के प्रयासों को आज सम्पूर्ण विश्व मान्यता प्रदान कर रहा है। प्रस्तुत अध्ययन अलकनन्दा घाटी में महिलाएं एवं पर्वतीय पर्यावरण के अन्तर्गत ग्राम रौता को प्रति चयनित ग्राम के रूप में चुना गया है। महिलाओं की बदलती स्थिति एवं पर्यावरण संतुलन का अध्ययन परिवर्तनशील ग्रामीण महिला क्रिया-कलाप के स्वरूप वर्ष 1975 व 2005 के आंकलन द्वारा किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. अलकनन्दा घाटी में महिलाओं एवं पर्वतीय पर्यावरण के स्वरूप का अध्ययन करना।

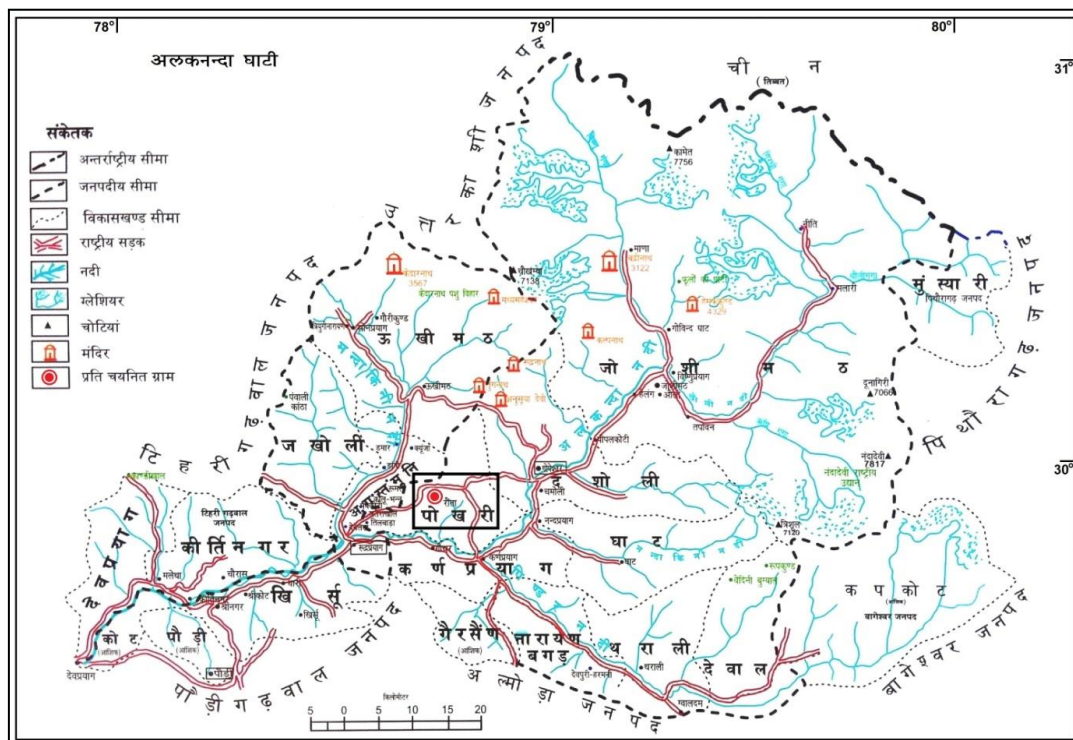
2. प्रति चयनित ग्राम की महिलाओं की बदलती स्थिति (वर्ष 1975 व 2005) द्वारा पर्यावरणीय प्रभाव का विश्लेषण करना।

शोध सामग्री एवं कार्य विधि

अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र ग्राम रौता (प्रति चयनित ग्राम) उत्तराखण्ड के मध्य भाग में विस्तृत रूप से फैली हुई अलकनन्दा घाटी के विकास खण्ड पोखरी (चमोली) में स्थित है (चित्र सं. 1)। अलकनन्दा का उद्गम अलकापुरी हिमानी है, जो कि $30^{\circ}-31^{\circ}$ उत्तरी अक्षांशों एवं $78^{\circ}-37^{\circ}$ व $80^{\circ}-1^{\circ}$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। अलकनन्दा घाटी का धरातल समुद्र तल से 457-7817 मी. की ऊँचाई के बीच संगठित है। घाटी के 55.0 प्रतिशत भौगोलिक क्षेत्र पर महान हिमालय का पर्यावरण तंत्र क्रियाशील है। उत्तराखण्ड का अधिकांश भाग आरक्षित वनों (64.79 प्रतिशत) के अन्तर्गत आता है तथा कृष्य बंजर भूमि का विस्तार मिलता है, जिसका उपयोग पशुचारण एवं चारा संग्रहण के लिए किया जाता है। पर्वतीय पर्यावरण में परिवर्तनशीलता जलवायु की विशेषता है। सामान्यतः अलकनन्दा घाटी की ग्रामीण जनता सामाजिक रूप से पिछड़ी मानी जाती है। छोटे जोत वाली कृषि भूमि इनकी परम्परागत आजीविका का आधार है।

प्रस्तुत अध्ययन अलकनन्दा घाटी में प्रति चयनित ग्राम रौता (चित्र सं. 1) की महिलाओं के वार्षिक क्रिया-कलाप के स्वरूप को वर्ष 1975 व 2005 में लिए गए आंकड़ों एवं सूचनाओं तथा जिला सांख्यिकीय अधिकारियों एवं पटवारियों द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों को एकत्रित कर पर्यावरणीय प्रभाव का विश्लेषण किया गया।



चित्र सं. 1 अलकनन्दा घाटी में प्रति चयनित ग्राम का मानचित्र

परिणाम एवं परिचर्चा

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि एवं पशुओं के अतिरिक्त महिलाओं का महत्वपूर्ण स्थान है (टोडरिया, 1995)। पारम्परिक दृष्टि से पशु-पालन ग्रामीण जनता का आर्थिक स्तर आंकने का महत्वपूर्ण मापदंड है। पूर्व में ग्रामीण महिलाएं अशिक्षित थीं व रोजगार के साधन न होने के कारण लोग कृषि एवं पशुपालन को महत्व देते थे। वर्तमान में अच्छी नस्ल के मवेशियों के विकास से जहां पशुपालन देश में लाभदायक सिद्ध हो रहा है। वहीं आज भी अलकनन्दा घाटी की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में अच्छे नस्ल के पशु नहीं हैं। सरकार की उपेक्षा और बुनियादी सुविधाओं का अभाव झेलते पहाड़ों में पुरुषों के पलायन से जीवन की गति धीमी पड़ गई है। ऐसे हालातों में मेहनतकश व संघर्षशील महिलाएं पहाड़ों में जीवन को गतिशील बनाए हुए हैं। कृषि क्षेत्र में 1971 की जनगणना के अनुसार चमोली में 60.9 प्रतिशत महिला कृषक थीं (पर्वतीय संवेदना, 2005)। गढ़वाल की विकट आर्थिक परिस्थितियां महिलाओं की जागरूकता में सबसे बड़ी बाधा थी। यदि शिक्षा को हम विकास का मेरुदण्ड कहें तो आर्थिक परिस्थितियां विकास के साथ शिक्षा का आधार हैं। इसमें अलकनन्दा घाटी क्षेत्र की भोटिया जाति की महिलाओं ने ऊन से दन, शाल, पंखी, कम्बल वह स्वयं बनाती हैं, अन्य ग्रामों में कहीं महिलाएं सिलाई-बुनाई का कार्य करती हैं तो कहीं कुटीर उद्योग में रिंगाल एवं लोहारगिरी में भी महिलाएं सहयोग कर रही हैं तथा स्वयं सहायता समूहों एवं महिला मंगलदलों के गठन के माध्यम से महिलाओं में जागृति देखने को मिली है।

स्वच्छता के प्रति जागरूकता

मानव को स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छता का विशिष्ट महत्व है। पूर्व में ग्रामीण महिलाएं शिक्षा अभाव से कृषि कार्य करने के अलावा अन्य दूसरे किसी भी कार्य का महत्व नहीं समझती थीं, लेकिन वर्तमान में शिक्षा एवं वाह्य प्रवास में ऊर्जा के वैकल्पिक साधनों ने घरों में सफाई को विशेष महत्व दिया है। जैसे पहले गांवों में एक ही कमरे में रसोईघर एवं विश्रामगृह होता था, लेकिन आज प्रत्येक गांवों में आधुनिक भवनों के निर्माण से अलग रसोईघर को महत्व दिया जा रहा है। पहले शौच आदि खुले स्थानों पर किया जाता था जिससे गन्दगी फैलती थी लेकिन आज प्रत्येक गांव में आधुनिक भवनों में शौचालयों का निर्माण बढ़ रहा है। पूर्व में महिलाएं साबुन का प्रयोग नहीं करती थीं इसके बदले राख, रीठा, भीमल की डंडियां को कूटकर उनका उपयोग कपड़े धोने के लिए करती थीं, वहीं आज आधुनिकीकरण से तरह-तरह सौन्दर्य प्रसाधनों का प्रयोग कर रही हैं। कपड़ों एवं घरों की सफाई एवं सजावट पर विशेष ध्यान देती हैं। सार्वजनिक रूप से भी प्रत्येक गांवों में महिला मंगलदल होने से महीने में गांव की सफाई जिसमें आम रास्ते व जलस्रोतों को प्रमुखता दी जा रही है।

राजनैतिक जागरूकता

उन्नीसवीं शताब्दी के सुधार आन्दोलनों (निरंजना, 1989) के द्वारा भारतीय स्त्रियों की समस्याओं पर विचार कार्य प्रारम्भ हुआ था। जिसके परिणाम स्वरूप राष्ट्रीय आन्दोलन में नारी शक्ति ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया था। ग्रामीण क्षेत्रों में भी महिलाएं विभिन्न संगठनों की सदस्य हैं पंचायती राज संस्थानों में इनकी भूमिका उल्लेखनीय है। प्रत्येक गांव में ग्रामीण व महिलाओं की समस्याओं को सुलझाने के लिए महिला मंगलदलों का गठन किया गया है। पहले जो महिलायें ग्राम पंचायतों में भाग नहीं लेती थीं, वर्तमान में वह गांव के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक कार्यों में सक्रिय हिस्सा लेती हैं। महिलाओं ने ग्रामीण स्तर पर कच्ची शराब की भट्टियों को समाप्त करवाने तथा कच्ची लकड़ी न काटने पर भी जोर दिया है। आज उनके विचारों में आधुनिकता का प्रभाव स्पष्ट झलकता है, वह अब अपने हक के लिए लड़ सकती हैं। उनमें सामाजिक जागृति उत्पन्न हुई है और स्थानीय विकास के प्रति उनमें रुचि बढ़ी है। वह अपनी तमाम समस्याओं को सार्वजनिक मंचों में रखने में समर्थ हो रही हैं। महिलाएं अनेक ग्रामों में ग्राम प्रधान शिक्षा समिति की सदस्य, महिला मंगल दल की अध्यक्षता, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं गांव के पंचायत के अंतर्गत एवं अन्य क्षेत्रों में महिलाओं की सदस्य संख्या में वृद्धि हुई है, समाज के सभी क्षेत्रों में महिलाएं बढ़-चढ़ कर भाग ले रही हैं (सिंह, 1993)।

महिलाओं की बदलती स्थिति एवं पर्यावरण संतुलन

प्राचीन समय में ग्रामीण महिलाओं को प्रतिदिन 18 घण्टे से अधिक काम करना पड़ता था। सुबह सूरज निकलने से पहले ही वह घर का काम-काज, पशुओं को चारा देना व चारे के लिए 5-10 किलोमीटर दूर जाना पड़ता था। घर एवं पशुओं के लिए पानी की व्यवस्था करना एक दुष्कर कार्य था। ऊँची संकरी पहाड़ियों से घास को बोझ लादकर लाना महिलाओं का जोखिम भरा कार्य था। "सै-सुरा का डांडा मांजी लागदी डैर और "खुदेन्द पराण मांजी तेरा बिगैर" अर्थात् ससुराल की पहाड़ियों में घास लकड़ी के लिए जाते समय डर लगता है इस प्राण को माँ तुम्हारी याद आती है। महिलाओं की पीड़ा को अभिव्यक्त करते यह लोकगीत पहाड़ के जनजीवन को कठिन स्थिति को बयान करते हैं। इन विषम परिस्थितियों के बीच रात-दिन काटते हुए महिलाओं को पता ही नहीं चलता कि कब बचपन बीता, कब जवान हुई और कब बुढ़ापा आ गया। अपनी सुविधाओं और अधिकारों के विषय में चिन्ता करने का उसके पास समय ही नहीं था। वर्तमान में संचार-साधनों में रेडियो, टेलीविज, ओडियो-वीडियो समाचार-पत्र, पत्र-पत्रिकाओं तथा प्रेस ने गढ़वाल हिमालय की महिलाओं के जागरूक करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन सभी माध्यमों से शिक्षित एवं अशिक्षित महिलाएं भी पूर्ण परिचित हो चुकी हैं।

ऊर्जा के वैकल्पिक साधनों में गैस चूल्हे एवं केरोसीन बायोगैस उपलब्ध करा कर पर्यावरण संतुलन का प्रयास किया है। ग्राम रौता में महिलाओं की बदलती स्थिति व पर्यावरण संतुलन का अध्ययन महिलाओं को

वार्षिक क्रिया-कलाप स्वरूप से स्पष्ट है। इस अध्ययन में 1975 में ग्रामीण महिलाओं के विभिन्न कार्यों जैसे कृषि कार्य, पशु लकड़ी, घास, घरेलू कार्य मनोरंजन व

आराम को 2005 की महिलाओं के वार्षिक क्रिया-कलाप के कार्यों से तुलना की गई है। कार्य करने के समय को घंटों में दर्शाया गया है (सारणी सं. 1)।

सारणी सं. 1 परिवर्तनशील ग्रामीण महिलाओं का वर्ष 1975 व 2005 वार्षिक क्रिया-कलाप स्वरूप (समय को घंटों में)

महीने	कृषि कार्य		पशु		घरेलू कार्य		मनोरंजन		आराम	
	1975	2005	लकड़ी	घास	1975	2005	1975	2005	1975	2005
जनवरी	3	1.3	7	4.2	7	4.9	1	4.2	6	9.4
फरवरी	3	1.7	8	4.5	6	4.9	1	4.0	6	9.2
मार्च	6	3.4	7	4.2	6	4.9	—	3.4	5	8.2
अप्रैल	9	6.5	4	4.1	6	4.0	—	12.6	5	7.0
मई	9	7.2	4	3.3	6	4.0	—	1.9	5	7.0
जून	10	7.2	4	3.3	4	4.2	2	2.4	4	7.0
जुलाई	10	8.2	3	3.1	5	4.1	1	2.0	5	6.6
अगस्त	10	7.8	5	3.5	5	4.2	—	2.1	5	7.0
सितम्बर	7	4.3	4	4.9	5	4.8	2	2.6	6	7.2
अक्टूबर	9	8.2	4	3.0	4	4.5	—	2.5	7	7.0
नवम्बर	12	8.3	3	2.8	3	5.1	—	1.3	6	6.6
दिसम्बर	1	—	6	4.1	5	6.4	3	4.7	9	10.5
औसत योग	7.4	5.3	4.9	3.8	5.2	4.7	0.8	3.6	5.8	7.7

स्रोत : प्राथमिक सर्वेक्षण 2005

ग्राम रौता की 1975-2005 में महिलाओं के कार्यों को घंटों को दर्शाया गया है (सारणी सं. 1)। जिसमें कृषि कार्य में 1975 की महिलायें जून, जुलाई, व नवम्बर में सर्वाधिक 10-12 घंटे कार्य कर रही हैं तो वहीं 2005 में महिलायें इन महीनों में कृषि कार्य 7.2-8.3 घंटे ही कर पाती हैं। फरवरी में पूर्व की महिलायें 8 घंटे पशु-लकड़ी एवं घास लाने में लगाती हैं तो वहीं दूसरी ओर वर्तमान महिलायें 4.5 घंटे ही इस कार्य को दे पाती हैं। घरेलू कार्य में भी पहले की महिलायें जनवरी में 7 घंटे कार्य करती हैं क्योंकि इस महीने कृषि कार्य कम किया जाता है। वर्तमान महिलायें 4.9 घंटे ही कर रही हैं, जबकि मार्च, अप्रैल और मई में कृषि कार्य में गेहूँ की फसल की कटाई-मड़ाई होती है तो मई में ग्रामीण क्षेत्रों में मंडुवा बोया जाता है। पहले की महिलायें इन महीनों में मनोरंजन नहीं करती थी वह कृषि कार्य को अधिक समय देती थी, जबकि यहां पर वर्तमान महिलायें अधिक कृषि कार्य के बावजूद भी 1.9-3.4 घंटे तक मनोरंजन करती हैं, उसी प्रकार आराम में भी है। जून, जुलाई में खेतों में फसलों की गुड़ाई निराई का कार्य प्रगति पर रहता है तो पहले की महिलाएं 4-5 घंटे ही आराम करती थी क्योंकि वह सुबह से लेकर शाम तक विभिन्न कार्यों में लगी रहती थी व सुबह जल्दी उठना उनका परम्परागत उद्देश्य था। वहीं आज की महिलायें 6-7 घंटे आराम करती हैं और देर से उठती हैं, आधुनिक महिला ने बहुत कुशलता के साथ सामंजस्य किया है। कृषि एवं चारा संग्रहण के चरम कार्यकाल में कार्य के घंटों में अन्तर कम है। जैसे अप्रैल एवं सितम्बर माह में चारा संग्रहण पर समय पूर्ववत् ही लगता है। इसी भांति कृषि में भी जुलाई, अगस्त एवं अक्टूबर में समुचित समय दिया जाता है। मुख्य अन्तर जनवरी, दिसम्बर माह में है।

वर्तमान बदलती स्थिति को देखा जाय तो आज गांव में भी आधुनिकीकरण से प्रभाव पड़ा है। आज ग्रामीण महिलायें भी कृषि एवं पशु तक सीमित नहीं हैं

वह इसके अलावा राजनीति एवं गांव की सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यों में भी भाग ले रही हैं इसका कारण उच्च शिक्षा व संचार सुविधाओं का व्यापक पैमाने पर ग्रामीण क्षेत्रों में फैलना है। पहले की महिलाओं के लिए न तो शिक्षा की व्यवस्था थी और न ही मनोरंजन साधन उपलब्ध थे। इसलिए भी वह अपना अधिकांश समय कृषि एवं पशुओं पर व्यतीत करती थी। सर्दियों में ठंड से बचाव के लिए आग सेंकते थे। जिससे उन्हें ईंधन की अधिक आवश्यकता पड़ती थी। लेकिन वर्तमान स्थिति इसके विपरीत है आज रोजगार के अवसरों में वृद्धि होने एवं आर्थिक विकास की तीव्रगति ने यातायात के साधनों की सुविधा होने से जहां ऊर्जा के वैकल्पिक साधनों ने ईंधन की समस्या को कुछ हद तक कम किया है तो दूसरी ओर महिलाओं की जागरूकता ने कृषि वानिकी के द्वारा चारे की समस्या को कम करने या प्रति व्यक्ति पशुओं की वर्तमान संख्या लगातार घटने से चारे की समस्या कम हुई है। महिलाओं की बदलती स्थिति के विषय में ग्राम रौता की 25-35 आयु वर्ग की 20 महिलाओं के शिक्षा स्तर के अनुसार वार्षिक क्रिया-कलाप के अनुसार उनके वार्षिक क्रिया-कलाप में (कृषि कार्य, पशु, लकड़ी, घास, घरेलू कार्य, मनोरंजन एवं आराम इन कार्यों के घंटों को दर्शाया गया है (सारणी सं. 2)। ग्राम रौता की 20 महिलाओं के आयु 25-35 वर्ष एवं शिक्षा स्तर के अनुसार वार्षिक क्रिया-कलाप का विवरण दिया गया है जिसमें प्राइमरी में 2, महिलाएं जूनियर 2, हाई स्कूल में 7, इण्टरमीडियट 6 तथा स्नातकोत्तर में 3 महिलाओं को सम्मिलित किया गया है। सारणी से स्पष्ट है कि जैसे-जैसे वर्तमान में ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च शिक्षित बहुएं आ रही हैं वैसे-वैसे कृषि कार्य व पशु, लकड़ी, घास संग्रहण करने के घंटों में कमी होती जा रही है। यहां पर प्राइमरी स्तर तक पढ़ी-लिखी महिलायें आज भी कृषि कार्य व पशु, लकड़ी व घास को अधिक समय देती हैं सारणी में प्राइमरी जूनियर व हाई स्कूल तक

महिलायें कृषि कार्य को क्रमशः 1 वर्ष में औसत 6.4, 6.0 व 6.2 घण्टे कार्य करती हैं जबकि शिक्षा स्तर बढ़ने के साथ इस कार्य के घण्टों में अन्तर दिखाई दे रहा है।

इण्टरमीडियट शिक्षा प्राप्त बहुओं में 4.8 व स्नातकोत्तर में 3.13 घण्टे ही वह कृषि कार्य करती हैं जबकि एक प्राइमरी स्तर की महिला एवं स्नातकोत्तर शिक्षित महिला के कृषि कार्य के घण्टों में दो गुना अन्तर है। आंकड़ों के माध्यम से भी यह अन्तर स्पष्ट दिखाई दे रहा है जैसे शिक्षा के स्तर में वृद्धि हो रही है वैसे कृषि कार्य को करने के घण्टों में गिरावट आ रही है। उसी प्रकार से पशु, लकड़ी, एवं चारा संग्रहण में भी दिखाई दे रहा है प्राइमरी से हाईस्कूल शिक्षित महिलाओं में उपरोक्त कार्य को करने के घण्टों में अधिकता है जबकि इण्टर एवं स्नातकोत्तर शिक्षित महिलाएं कृषि कार्य एवं पशु, लकड़ी, घास जैसे कार्यों को अधिक महत्व दे रही है तो दूसरी ओर इन से अधिक शिक्षित महिलाएं घरेलू कार्य एवं मनोरंजन को महत्व देती हैं, जहां घरेलू कार्य को करने में प्राइमरी स्तर तक शिक्षित महिलाएं वर्ष में 4.0 घण्टे औसत इस

कार्य को करती है। आराम, मनोरंजन एवं घरेलू कार्यों में उच्च शिक्षित महिलाओं का अधिक है जबकि कृषि एवं पशु, लकड़ी, घास में शिक्षित महिलाओं समय उपयोग कम है। इसमें यह देखने को मिला है कि 26-27 आयु वर्ग की महिलायें उच्च शिक्षित होने के साथ कृषि एवं पशुपालन का कार्य 4-6 घण्टे तक करती हैं जबकि इण्टर तक महिलाएं शिक्षित हाईस्कूल स्तर तक शिक्षित महिलाएं 29-33 और वह उपरोक्त कार्य को 10 से अधिक घण्टों तक का समय वार्षिक है। जबकि जूनियर स्तर तक शिक्षित महिलाएं 27-35 वर्ष तक के आयु वर्ग में सम्मिलित हैं। वह इन कार्य को करने में 11 घण्टों तक का समय देती हैं जबकि प्राइमरी स्तर पर यह कार्य 11 घण्टों से अधिक समय तक करती हैं। शिक्षा के स्तर में उत्तरोत्तर वृद्धि होने से मनोरंजन एवं आराम में भी वृद्धि हुई है। इस प्रकार से ग्रामीण अर्थव्यवस्था में भी महिलाओं की बदलती स्थिति को स्पष्ट दर्शाया गया है एक ओर जहां महिलायें उच्च शिक्षा की ओर आकर्षित हो रही हैं। वहीं दूसरी ओर ग्रामीण अर्थव्यवस्था में बदलाव लाने में सक्षम भी हैं।

सारणी सं. 2 शिक्षा के स्तर के अनुसार (25-35 आयु वर्ग) महिलाओं का वार्षिक क्रिया-कलाप स्वरूप (समय को घण्टों में)

महीने	कृषि कार्य					पशु, लकड़ी, घास					घरेलू कार्य					मनोरंजन					आराम				
	प्रा.	जू.	हा.	ड.	स्ना.	प्रा.	जू.	हा.	ड.	स्ना.	प्रा.	जू.	हा.	ड.	स्ना.	प्रा.	जू.	हा.	ड.	स्ना.	प्रा.	जू.	हा.	ड.	स्ना.
जनवरी	2	2	1.7	1	—	7.5	5	4.9	4.2	—	3.5	5	4.7	4.5	7	2	3	3.6	5	6.3	9	9	9.1	9.3	10.6
फरवरी	3	2	2	1.7	—	7	6	5.6	4.2	—	3.5	4.5	4.4	4.7	7.3	2.5	3	3	4.5	3.3	9	8.5	9	9	10.3
मार्च	5	4	3.7	3.3	1.3	5.5	5.5	4.7	4.2	1.3	3.5	4.5	4.9	5	5.7	2	2	3	3.5	5.7	8	8	7.7	8	10
अप्रैल	8	8	7.6	6	3	5	6	5	3	2.3	3.0	3	3.1	4.7	5.7	1	1	1.9	3.3	2.3	7	6	6.7	6.8	8.3
मई	9	9	8.6	6	4	4.5	4	3	3	3.3	2.5	4	4.1	4.8	5.3	1	0.5	1.4	2.7	3	7	6.5	6.4	7.5	8.3
जून	8.5	8	7.9	7.2	4.3	4	4	3.3	2.5	3.7	3.5	3.5	3.6	4.5	6	1	2	2.4	2.7	2.7	7	6.5	6.9	7.2	7.3
जुलाई	9	9	8.9	6	6	4	3.5	3.1	3.5	2	3.5	2.5	3.4	4.7	5.7	1	2.5	1.9	1.7	3.3	6.5	6.5	6.6	6.5	7
अगस्त	9	8	8.7	7	4	5	4	3.1	3.8	2	4	4	3.9	3.5	6.3	—	2.5	1.4	2.7	3.7	6	6.5	6.9	7	8
सितम्बर	5	5	5	3.8	4	6	6	5.1	4.3	4	4	4	4.1	5.7	5.7	2	2.5	2	2.7	4.3	7	7	7	7.5	7.2
अक्टूबर	9	8.5	9.9	7.2	5.3	4.5	4	3.3	2.7	1.3	3	3	3.6	5.2	6.7	—	1.5	1.6	1.8	3.7	7	7	6.9	7.2	7
नवम्बर	9	9	9	8.3	5.7	3.5	3.5	2.7	2.8	2	5	5	4.1	5.2	7.3	—	0.5	1.3	1.5	2.3	7	6	6.9	6.1	7
दिसम्बर	—	—	—	—	—	5	6	5.9	3.2	—	4	4	8.1	5.2	6.7	2.3	4	4.4	5.2	5.3	10	10	10	10.5	12
औसत	6.4	6.0	6.2	4.8	3.13	5.1	4.8	4.1	3.5	1.8	3.6	3.9	4.3	4.8	6.3	1.2	2.1	2.3	3.1	3.8	7.5	7.3	7.5	7.7	8.6

स्रोत : प्राथमिक सर्वेक्षण 2005

वर्तमान शोध में सर्वेक्षित ग्राम में पर्यावरण संरक्षण के विषय में महिलाओं से बातचीत करने से यह पता चला कि गांव की कुछ महिलाएं 'पर्यावरण' शब्द के विषय में नहीं जानती हैं लेकिन जब उन्हें पूछा गया कि जंगलों के कटने से क्या नुकसान होगा तो वह कहने लगी कि हमें चारा व ईंधन की प्राप्ति में कमी होगी व हमें दूर-दूर जाना पड़ेगा। इसलिए जंगलों का बचाव आवश्यक है। वास्तविक धरातल पर ग्रामीण महिलायें पर्यावरण संरक्षण के लिये कारगर रूप से अधिक कार्य कर रही हैं। महिला मंगलदलों के माध्यम से यह कार्य मुख्य रूप से हो रहा है। परन्तु ये महिलायें पर्यावरण की वैज्ञानिक अथवा साधारण परिभाषा से कोसों दूर दिखाई देती हैं ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं ने पर्यावरण संरक्षण के लिए किसी भी प्रकार की कच्ची लकड़ियों को नहीं काटा जाएगा जो परिवार कच्ची लकड़ियों को काटेगा उस पर महिला संगठन जुर्माना लेगा। वह यह जानती है कि उपरोक्त चीजों के बिना उनका जीवन संकट में है। आज वनों के ह्रास में वनाग्नि का महत्वपूर्ण स्थान है लेकिन वनों में यदि आग लग जाती है तो ग्रामीण महिलायें बड़-चढ़ कर आग को बुझाने में

हिस्सा लेती हैं। प्राकृतिक जल स्रोतों को ह्रास के विषय में पूछने पर वह कहती है कि जहां पर बांझ का जंगल होता है वहां पर प्राकृतिक जल स्रोत होते हैं इसीलिए वह जल स्रोत के संरक्षण के लिए वृक्षों की उपयोगिता को समझती हैं। इस प्रकार ग्रामीण महिलायें अर्थ अथवा परिभाषाओं को न समझी हों लेकिन पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, जैसे :

चिपको आन्दोलन से महिलाओं में जागृति : अलकनन्दा घाटी से ऊपरी जलागम में अवस्थित (किरन डंगवाल, 1998) चिपको आन्दोलन जन-जन तक पहुंचाने में रैणी गांव की गौरा देवी, चण्डी प्रसाद भट्ट एवं सुन्दर लाल बहुगुणा ने चिपको सम्बन्धी गतिविधियों को जनपद स्तरों पर संचालित किया। अपने घर गृहस्थी एवं खेती आदि के कार्य में व्यस्त रहने वाली महिलायें पर्यावरण संरक्षण से अनभिज्ञ थी। अपने वन क्षेत्रों की रक्षा करने के लिए वह शेरनी की तरह भिड़ने को तैयार हैं। रैणी गांव में गौरा देवी के नेतृत्व में पुरुषों की गैर-मौजूदगी में वहां के जंगल को काटने आये जंगलात एवं ठेकेदार के लोगों को हिम्मत से बाहर खदेड़ना उल्लेखनीय है।

इस आन्दोलन में महिलाओं ने सक्रिय भूमिका निभायी, जिससे आज महिलायें सामाजिक जीवन के विविध पहलुओं एवं वृक्षारोपण गांव को हरा-भरा बनाने व वनीकरण का कार्य लोगों की इच्छा और उन्हें विश्वास में लेकर करना चाहिये। पुराने रूढ़िवादी परम्परा को छोड़कर आधुनिकता की ओर बढ़ने की उनकी ललक स्पष्ट होती है। इस नयी सोच के लिए चिपको आन्दोलन ने ही उनके लिये प्रेरणा स्रोत का कार्य किया। इस आन्दोलन से महिलाओं में विरोध की साहसिक भावना का प्रादुर्भाव स्पष्ट झलकता है।

पशुओं की संख्या में कमी : ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि के बाद पशु पालन का महत्वपूर्ण स्थान है। सर्वेक्षित ग्राम से यह तथ्य सामने आये है कि 10 वर्ष पहले की पशु संख्या की अपेक्षा वर्तमान पशु संख्या में कमी हुई है। इसका कारण ग्रामीण स्तर पर जनसंख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि होना व वन क्षेत्र का सीमित होना है। वर्तमान में पशुओं से सम्बन्धित कार्यों को करने में युवा महिलायें झिझक महसूस करती हैं जहां कृषि कार्य की दृष्टि से पशुओं का ह्रास होना चिन्ताजनक है तो वहीं पर्यावरण संरक्षण की वृद्धि से यह ठीक भी है क्योंकि पशुओं की संख्या में कमी होने से वन क्षेत्रों पर दबाव कम रहेगा व अनावश्यक ही वृक्षों से चारा नहीं लिया जायेगा।

ऊर्जा के वैकल्पिक साधनों का उपयोग : विकासोन्मुख अर्थव्यवस्था में परिवहन का प्रमुख स्थान है आज अधिकांश गांव सड़क के सम्पर्क में हैं जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में भी ऊर्जा के वैकल्पिक साधनों का उपयोग किया जा रहा है। ग्रामीण स्तर पर भी कई परिवार ऐसे हैं जो केवल सर्दियों में ही परम्परागत ईंधन का उपयोग करते हैं वैकल्पिक साधनों में गैस, केरोसीन, का उपयोग दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है, जिससे महिलाओं को ईंधन संग्रहण में कमी आयी है, महिलाओं का मानना है कि वैकल्पिक साधनों से घर को स्वच्छ रखा जा सकता है। ईंधन के प्रयोग से धुंए के द्वारा घरों में गन्दगी हो जाती है व आस-पास का वातावरण प्रदूषित हो जाता है घरों की सफाई एवं लिपाई पुताई के लिए महिलायें कृषि क्षेत्रों एवं वन क्षेत्रों से मिटटी का खनन करते हैं जिससे इन क्षेत्रों में बरसात में अपरदन एवं भूस्खलन बड़े पैमाने पर होता है इन साधनों के उपयोग से पर्यावरण के ह्रास से बचा जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में वर्तमान में भी जलावन लकड़ी को आग तापने, खाना बनाने, पानी गर्म करने आदि कार्यों में इसका उपयोग किया जाता है प्रवास ने भी ग्रामीण क्षेत्रों में ऊर्जा के वैकल्पिक साधनों के उपयोग में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है जो कि ग्रामीण स्तर पर पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से मुख्य तथ्य माना जा रहा है।

अंततः पर्यावरणीय संरक्षण एवं विकास हेतु वृक्षारोपण, सामाजिक वानिकी, औद्यानिकी, चारागाह विकास, अच्छी नस्ल के उच्च उत्पादकता वाले पशुओं की संख्या में वृद्धि, कृषि भूमि की उत्पादकता बढ़ाने हेतु उन्नतशील प्रजातियों के बीजों एवं उर्वरकों का वितरण, लघु सिंचाई एवं लघु अभियांत्रिकी संरचनाओं आदि के निर्माण से संबंधित कार्यों के समेकित रूप से सफल संचालन हेतु राज्य, जिला एवं क्षेत्रीय स्तर पर कार्यालय/इकाईयां का निमाण कर पर्वतीय पर्यावरण को बचाया जा सकता है (कार्यपूति दिग्दर्शिका, 2015)।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि महिलाओं का पहाड़ जैसा कठिन जीवन, वर्ष-भर कार्यों में ही जुटे रहना, गृहस्थी का सारा बोझ महिलाओं के कंधों पर होते हुए भी पहाड़ की महिलाएं पर्वतीय पर्यावरण के प्रति जागरूकता हुई हैं। वर्तमान में ग्रामीण महिलाओं के रहन-सहन, खान-पान, एवं वेश-भूषा पर राजनैतिक जागरूकता का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। महिलाएं ग्रामीण समस्याओं के निराकरण में आज प्रत्यक्ष भूमिका निभा रही हैं। ग्रामीण स्तर पर भी महिलायें विकासात्मक अर्थव्यवस्था की ओर उन्मुख हो रही हैं जो कि पर्यावरण सन्तुलन की ओर संकेत करता है। हिमालय के पर्यावरण संरक्षण में महिलाएं वृक्ष लगाने व वनों के संरक्षण एवं संवर्द्धन की ओर आकृष्ट हुई हैं। महिलाओं की जागरूकता से धीरे-धीरे गांवों में वैकल्पिक ऊर्जा के साधनों के रूप में गैस चूल्हों का प्रयोग अधिक होने लगा है। ग्रामों में उच्च शिक्षा का विकास से महिलाओं में जागृति, उत्प्रेवास व चारा संग्रहण की बढ़ती दूरी को प्रभावित किया है। महिलाओं द्वारा पशु चारण क्षेत्रों में नये पेड़-पौधों का रोपण कर पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी जा रही है। इसके अतिरिक्त ग्रामीण समुदाय विशेषकर महिलाओं एवं निर्बल वर्ग को विभिन्न परियोजनाओं के नियोजन एवं क्रियान्वयन में सहभागी बनाकर उनमें पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता उत्पन्न की जा सकती है।

आभार

सर्वप्रथम मैं प्रो. डी.डी. मैठाणी, विभागाध्यक्ष (भूगोल विभाग, गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर श्रीनगर गढ़वाल) का सहृदय आभारी हूँ, जिनके विभागीय सहयोग से यह शोध सम्पन्न हुआ। मैं शुक्रिया अदा करती हूँ, सर्वेक्षित ग्राम के ग्राम प्रधान एवं वहाँ के समस्त ग्रामीणों का जिन्होंने मुझे प्राथमिक सर्वेक्षण में उपलब्ध आंकड़ों एवं सूचनाओं को एकत्रित करने में सहयोग दिया। मैं जिला सांख्यिकीय अधिकारी एवं पटवारी जी की भी आभारी हूँ, जिन्होंने आवश्यक आंकड़ों को उपलब्ध कराने में सहयोग प्रदान किया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. टोडरिया एन.पी. (1995) : उत्तराखण्ड दृष्टि, दशा और दिशा, उत्तराखण्ड में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक स्थिति, पृ.सं. 74
2. चौहान दिगम्बर सिंह (1993) : स्थानीय स्वशासन एवं महिला राजनीतिक सहभागिता (गढ़वाल) जनपद का एक अध्ययन, हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल), उत्तराखण्ड। अप्रकाशित शोध प्रबन्ध।
3. बहुगुणा निरंजना (1989) : गढ़वाल में महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता हे.नं.ब.ग.विअ. प्र. शोध प्रबन्ध।

4. नित्यानन्द (2004) : उत्तरांचल ऐतिहासिक परिदृश्य एवं विकास के आयाम, देहरादून पृ. सं. 44 ।
5. डंगवाल, किरन (1998) : चिपको आन्दोलन और नारी शक्ति, पौड़ी पृ. सं. 102–104 ।
6. पर्वतीय संवेदना अगस्त (2005) : संपादकीय कार्यालय 64, चन्दर नगर देहरादून पृ. सं. 37
7. उत्तराखण्ड इयर बुक (2009) : विनसर पब्लिकेशन क., देहरादून उत्तराखण्ड पृ. सं. 32
8. कार्यपूर्ति दिग्दर्शिका (2015) : कार्यपूर्ति दिग्दर्शिका 2014–2015, जलागम प्रबन्धन विभाग, जलागम प्रबन्ध निदेशालय देहरादून ।
9. ठाकुर किरन (2012) : पर्यावरण संकट में, कंट्री एंड पॉलिटिक्स, नई दिल्ली 24 सितम्बर ।
10. वार्षिक प्रतिवेदन (2008): गोविन्द बल्लभ पन्त हिमालय पर्यावरण एवं विकास संस्थान, वार्षिक प्रतिवेदन 2007–2008 ।